Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23067
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23067

ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

CONFERENCE PAPER

तबला वादन के क्रमिक विकास में दिल्ली घराने का योगदान और उस्ताद हिदायत ख़ाँ साहब का ऐतिहासिक महत्व

विजय शेखावत

1. (सहायक आचार्य, संगीत विभाग, एस.एम.एम. राजकीय कन्या महाविद्यालय, भीलवाड़ा एवं शोधार्थी, संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर).

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Abstract

संगीत मानव समाज की कलात्मक उपलब्धियों और सांस्कृतिक परंपराओं का उत्कृष्ट प्रतीक है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की वादन परंपरा में तबले का स्थान अत्यंत विशिष्ट एवं अपरिहार्य है। प्रस्तुत शोध पत्र तबला वादन के क्रमिक विकास, विशेषकर 'आदि घराने' (दिल्ली घराने) के ऐतिहासिक, तकनीकी और संरचनात्मक योगदान का विस्तार से विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है। इसके साथ ही, यह शोध पत्र इस गौरवशाली परंपरा को समृद्ध करने वाले मूर्धन्य साधक उस्ताद हिदायत ख़ाँ साहब के व्यक्तित्व, उनके संघर्षमय जीवन, विशिष्ट वादन शैली और सांगीतिक जगत में उनके अमूल्य योगदान पर गहराई से प्रकाश डालता है। यह पत्र दर्शाता है कि कैसे उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन संगीत को समर्पित कर दिया और अपनी कला के माध्यम से तबले को उस सर्वोच्च ऊँचाई पर स्थापित किया, जिसका वास्तव में वह अधिकारी था।

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Introduction:-

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है और संगीत अनादि काल से ही सहचर के रूप में हमारी संस्कृति के साथ जुड़ा हुआ है। शास्त्रों में नाद को 'परम ब्रह्म' कहा गया है और यह माना जाता है कि संपूर्ण सृष्टि ही नादात्मक है। गायन, वादन और नृत्य—इन तीनों कलाओं का संयुक्त रूप ही संगीत माना गया है, और जब इनका स्वतंत्र प्रयोग होता है, तब भी जनमानस में इसे संगीत ही कहा जाता है। नाद की इसी उपासना जब ताल और लय के माध्यम से की जाती है, तो तबला वाद्य की उत्पत्ति और विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।

Corresponding Author:- विजय शेखावत
Address:- (सहायक आचार्य, संगीत विभाग, एस.एम.एम. राजकीय कन्या महाविद्यालय, भीलवाड़ा एवं शोधार्थी, संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर).

भारतीय शास्त्रीय संगीत में 'घरानों' का बहुत गहरा महत्व रहा है, जो गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से अपनी एक विशिष्ट पहचान और वादन शैली को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ विशेष गुण या विशेषताएँ होती हैं जो उसे दूसरों से भिन्न बनाती हैं, और इन्हीं गुणों का समुच्चय उसका व्यक्तित्व कहलाता है। उस्ताद हिदायत ख़ाँ साहब एक ऐसे ही अनूठे व्यक्तित्व के स्वामी थे, जिनके आचार, विचार और व्यवहार में संगीत की पवित्रता झलकती थी। तबला वादन के क्रमिक विकास में दिल्ली घराने का ऐतिहासिक एवं तकनीकी योगदान भारतीय शास्त्रीय संगीत में तबले के स्वतंत्र वाद्य के रूप में स्थापित होने की ऐतिहासिक यात्रा 'दिल्ली घराने' से ही शुरू होती है। दिल्ली घराने को तबले का 'आदि घराना' (प्रथम या मूल घराना) माना जाता है, जहाँ से अन्य सभी घरानों (जैसे अजराड़ा, लखनऊ, फर्रुखाबाद, बनारस और पंजाब) की उत्पत्ति या प्रेरणा जुड़ी हुई है। अठारहवीं शताब्दी में उस्ताद सिधार खान डाढ़ी द्वारा स्थापित इस घराने ने पखावज के खुले, भारी और गूंजदार बोलों के स्थान पर तबले के अनुकूल स्वतंत्र,

कोमल और स्पष्ट बोलों का निर्माण किया। तबले के क्रमिक विकास में दिल्ली घराने के निम्नलिखित योगदान ऐतिहासिक माने जाते हैं:

- **'बंद बाज' या 'किनारे का बाज' की स्थापना:** दिल्ली घराने ने तबले की वादन तकनीक में एक क्रांतिकारी बदलाव किया। इस घराने ने तबले की चांटी (किनारे) और स्याही के मध्य के हिस्से का बेहतरीन और संतुलित उपयोग किया। इसे 'बंद बाज' कहा जाता है। इस तकनीक में ध्वनि अत्यंत मधुर, स्पष्ट और बारीक होती है, जो उस समय तेजी से लोकप्रिय हो रहे 'ख्याल गायन' की संगति के लिए सर्वाधिक उपयुक्त थी।
- **उंगलियों का विशिष्ट प्रयोग:** पखावज खुले हाथ से बजाया जाता था, लेकिन दिल्ली घराने ने उंगलियों के निकास पर ज़ोर दिया। इस घराने की सबसे बड़ी तकनीकी विशेषता तर्जनी (Index Finger) और मध्यमा (Middle Finger) का स्वतंत्र और सधा हुआ प्रयोग है। इससे वादन में असाधारण गति और स्पष्टता आती है।
- **'पेशकार' का उद्भव और विकास:** तबला वादन को एक व्यवस्थित और दार्शनिक रूप देने का श्रेय दिल्ली घराने को जाता है। विलंबित लय में वादन का आरंभ करने के लिए 'पेशकार' की रचना इसी घराने की देन है।
- **'कायदा' प्रणाली का निर्माण:** कायदे का निर्माण दिल्ली घराने का सबसे बड़ा सांगीतिक योगदान है। जिस प्रकार गायन में राग का विस्तार नियमों में बंधकर किया जाता है, उसी प्रकार तबले में बोलों का नियमबद्ध विस्तार पलटे और तिहाई के साथ कायदे के माध्यम से किया जाता है।
- **विशिष्ट बोलों का निर्माण:** दिल्ली घराने ने तबले के लिए विशेष रूप से 'धा', 'गे', 'ना', 'तिन', और 'क्रेधा' जैसे वर्णों का परिष्कार किया।

उस्ताद हिदायत ख़ाँ साहब: पारिवारिक पृष्ठभूमि और सांगीतिक विरासत:-

एक श्रेष्ठ कलाकार के निर्माण में उसके परिवेश और उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि का बहुत बड़ा हाथ होता है। उस्ताद हिदायत ख़ाँ साहब दिल्ली घराने की इसी समृद्ध विरासत के सच्चे संवाहक थे। उनका जन्म 14 जून 1934 को राजस्थान राज्य के सीकर ज़िले में हुआ था। उन्हें सांगीतिक संस्कार जन्म से ही प्राप्त हुए थे। उनके पिता उस्ताद वज़ीर खान साहब एक उच्च कोटि के सारंगी वादक थे, तथा उनकी माता फूलबेगम जयपुर राजघराने के दरबारी गायक ओलाबक्श दाउसी की सुपुत्री थीं। अतः, यह कहना बिलकुल भी गलत नहीं होगा कि संगीत उन्हें अपने माता-पिता से विरासत में आशीर्वाद के तौर पर प्राप्त हुआ था।

कथक से तबले तक का कलात्मक मोड़ और तालीम:-

उनके सांगीतिक जीवन का प्रारंभ अत्यंत रोचक और स्वाभाविक परिस्थिति में हुआ। बाल्यावस्था में उनके पिताजी उन्हें कथक सिखाने हेतु एक नृत्य गुरु के पास लेकर गए थे। लेकिन वहाँ जाकर वे नृत्य के बजाय केवल तबले को निहारते रहते थे और अकेले में जब भी मौका मिलता था तो तबला बजाने लग जाते थे। उनकी यह स्वाभाविक रुचि देखकर उनके नृत्य गुरु ने पिता वज़ीर भाई से कहा कि इस बालक की रुचि तबले में है, अतः इन्हें तबले की तालीम दिलवाये।

- प्रारंभिक तालीम: तत्पश्चात उनके पिताजी उन्हें पंडित चिरंजीलाल जी (जयपुर वाले) के पास लेकर आए और वहीं से उनकी तबले की तालीम प्रारंभ हुई।
- दिल्ली घराने से जुड़ाव: आगे जाकर उन्होंने मुख्य रूप से दिल्ली घराने के अशरफ खान और अज़ीम बक्श जावरा वाले आदि कई उस्तादों से तबले की उच्च कोटि की तालीम ली।
- स्व-प्रेरित शिक्षा: सीखने की उनकी ललक इतनी उत्कृष्ट थी कि वे स्वयं को महान तबला वादक अहमदजान थिरकवा का सुन्नीशागिर्द (सुनकर इमान लाने वाले) भी बताते थे।

वादन शैली, रियाज़ का कठोर अनुशासन और व्यक्तित्व:-

उस्ताद हिदायत ख़ाँ साहब बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपने वादन द्वारा तबले में नया जीवन डाल दिया था। आज भी जयपुर तथा दिल्ली के कई वादक अपने वादन में खाँ साहब का ही अनुसरण कर रहे हैं, जो उनके लिए अथक साधना का ही प्रतीक है।उनका रियाज़ का अनुशासन अत्यंत कठोर और दार्शनिक था। वे तबले के रियाज़ के लिए प्रतिदिन 4-5 घंटे तो अवश्य देते थे। जब वे सारंगी वादक रमज़ान ख़ाँ साहब के साथ रियाज़ पर बैठते थे, तो पूरी रात रियाज़ में ही निकल जाती थी और सवेरा कब हुआ, इसका खां साहब को पता ही नहीं चलता था। एक कलाकार के रूप में वे जितने ऊँचे मुकाम पर थे, उनका व्यक्तित्व उतना ही ज़मीनी था। अत्यंत उदार स्वभाव, सभी से समान व्यवहार और उच्च कोटि के कलाकार होने पर भी उनकी वेशभूषा अत्यंत साधारण थी। यही सरलता उनकी कला को उच्चतम स्तर पर स्थापित करती है।

संघर्षमय जीवन और सांगीतिक संगति का सौंदर्यशास्त्र:-

एक संगीतकार का जीवन अधिकांशतः संघर्षमय होता है, जिसमें उसे विश्व में अनूठा स्थान प्राप्त करने हेतु विभिन्न परिस्थितियों से गुज़रना पड़ता है। उस्ताद हिदायत ख़ाँ साहब की यात्रा भी इसी संघर्ष से होकर गुज़री:-

- रेडियो सेवा: आपकी सर्वप्रथम नियुक्ति ऑल इंडिया रेडियो जयपुर में हुई। यहाँ कुछ वर्ष कार्य करने के पश्चात, अन्य श्रेष्ठ अवसरों की तलाश में 1981 में आप ने अपना स्थानांतरण ऑल इंडिया रेडियो मुंबई में करवा लिया तथा सपरिवार मुंबई चले गए।
- दिग्गजों के साथ संगति: मुंबई स्थानांतरण के बाद उनके कार्यक्रमों का सिलसिला इस प्रकार बढ़ा कि कई नामी संगीतकार जैसे अली अक़बर ख़ाँ, विलायत ख़ाँ, पंडित रविशंकर जी, राशिद खां साहब, इनायत खान साहब और अरविंद पारीक आदि दिग्गजों के साथ इनकी तबले पर संगत हुई।
- नृत्य संगति: वे सोलो वादन के साथ-साथ नृत्य के साथ भी संगत करते थे। पंडित बिरजू महाराज जी और श्रीमती सितारा देवी के साथ भी आपने अनेकों बार संगत की है।
- समकालीनों से संबंध: आपके अल्लारखा साहब तथा उनके सुपुत्र उस्ताद ज़ाकिर हुसैन के साथ अच्छे ताल्लुकात थे।

वैश्विक पटल पर भारतीय संगीत का प्रसार:-

उनकी कला की गूंज केवल भारत तक सीमित नहीं रही। एक तबला वादक के रूप में उन्होंने सैकड़ों संगीत कार्यक्रम में भाग लिया। निजी और सरकारी तौर पर अमेरिका, इंग्लैण्ड, जापान, इटली, मोरक्को, मलेशिया देशों की भी यात्रा की ओर भारतीय संगीत का प्रचार प्रसार किया। यहाँ उन्होंने न केवल संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किए अपितु निरंतर संगीत विद्यार्थियों और जिज्ञासाओं को संगीत शिक्षा देना भी विदेश यात्रा में शामिल था।

शिक्षण पद्धति, गुरु-शिष्य परंपरा और पारिवारिक विरासत:-

उस्ताद हिदायत ख़ाँ साहब एक तरफ़ तो तबला वादन के सम्राट थे तथा दूसरी तरफ़ अपनी भाव पूर्ण तबला वादन कला के अनुरूप ही अपने शिष्यों से भी भावनात्मक रूप से जुड़े हुए थे। भारत की दिग्गज कलाकारों के साथ संगति के साथ साथ नवीन सामग्री का

समावेश कर शिष्य परम्परा में इसका प्रचार किया। उनकी शिष्य परंपरा काफ़ी बड़ी है और आपने अनेको शागिर्द तैयार किए जो आज संगीत जगत में अपना परचम लहरा रहे है:

- आपके प्रथम शागिर्द युसूफ खाँ साहब (जयपुर) थे।
- इनके अलावा दिल्ली घराने के फैयाज खान साहब, रहमान खान बीकानेर, रमज़ान खाँ, मुंजाल मेहता गुजरात, निषाद अली, तथा लतीफ़ खां जो विदेशों में भी संगीत का प्रचार प्रसार कर रहे हैं।

चूँकि प्रारंभ से ही परिवार में संगीत का माहौल था इसलिए आपने अपने दोनों पुत्रों हमीद ख़ाँ और जाफर ख़ाँ तथा दोनों पुत्रियां फ़रीदा बानो तथा नादिया बानो को उनकी छोटी उम्र में ही संगीत की शिक्षा प्रदान की। इनके दोनों पुत्र तबले के जाने माने कलाकार हैं तथा देश विदेशों में अपने संगीत कार्यक्रम निरंतर कर रहे हैं। इनकी दोनों पुत्रियों गायन के क्षेत्र में प्रवीण है; फ़रीदा बानो ने फ़िल्म संगीत में भी अपनी आवाज दी है।

निष्कर्ष :-

अत्यंत संघर्षमय जीवन के बाद भी उस्ताद हिदायत ख़ाँ साहब अपने सरल स्वभाव और असीम सांगीतिक प्रतिभा के लिए सदैव याद किए जाएंगे। उन्होंने दिल्ली घराने की ऐतिहासिक वादन शैली को न केवल जीवित रखा, बल्कि अपनी कल्पनाशीलता से उसे एक नया आयाम प्रदान किया। आपको मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के द्वारा राजस्थान संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। जीवन के अंतिम समय में आप जयपुर आ गए तथा 23 अगस्त 2013 को लगभग 79 वर्ष की आयु में आपका परलोक गमन हुआ। एक संगीतकार की जीवन यात्रा अन्य संगीत साधकों हेतु एक विशिष्ट प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करती है। इनके द्वारा अपने वादन क्षेत्र में किए गए प्रयोग, मौलिक कार्य और निरंतर सीखने व सिखाने की प्रवृत्ति संगीत जिज्ञासुओ तक पहुँचना आवश्यक है, ताकि उस्ताद हिदायत ख़ाँ साहब के कार्यों और संगीत साधना से प्रत्येक संगीत प्रेमी अवगत हो सकें। अपनी निर्देशिका डॉ. अंशु वर्मा के सुदृढ़ निर्देशन में किया जा रहा यह शोध कार्य आगामी शोधकर्ताओं के लिए नए आयाम खोलेगा और संगीत साधकों को निरंतर प्रेरणा देगा कि किस प्रकार एक संगीतज्ञ विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को उत्कृष्टता के स्तर पर पहुँचा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. मिस्त्री, आ. ई. (1999). तबले और पखावज के घराने एवं परंपराएं. मुंबई: पं. पलुस्कर स्मारक समिति।
2. शुक्ल, डॉ. श. (1992). तबला वादन में दिल्ली घराना. नई दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स।
3. शर्मा, डॉ. यो. (2006). तबला वादन कला और शास्त्र. नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन्स।
4. गर्ग, ल. (1995). हमारे संगीत रत्न. हाथरस: संगीत कार्यालय।
5. परांजपे, श. श्री. (1985). भारतीय संगीत का इतिहास. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।
6. वशिष्ठ, स. (1988). ताल मार्तण्ड. हाथरस: संगीत कार्यालय।
7. मुतालिक-देसाई, व. (2001). तबला मंजरी. पुणे: गायन समाज।
8. साक्षात्कार एवं संस्मरण: उस्ताद हिदायत ख़ाँ साहब के परिवारजनों, मित्रों, शिष्यों एवं समकालीन सहकर्मियों से शोधकर्ता द्वारा प्राप्त व्यक्तिगत संवाद एवं संस्मरण।